

विचारधारा की कट्टरता के दुष्परिणाम



जब भी दुनिया में कोई भी विचार धारा में कट्टरता बढ़ी है तो लंबे समय में खराब परिणाम लाई है।

साम्यवाद कल अच्छा था आज बुरा हो गया। साम्यवाद ने सामाजिक समानता लाने के चक्कर में सामाजिक विकास और लोकतंत्र का गला घोंट दिया। आज साम्यवाद फेल हो गया है। साम्यवादी चीन और रूस का पूंजीकरण शुरू हो गया है।

पूंजीवाद आज हमें अच्छा लग रहा है। बहुत सारे देशों ने पूंजीवाद से विकास करने के चक्कर में सामाजिक असमानता एवं विषमताओं को बढ़ा दिया है। पूंजी को बढ़ाने हेतु नये नये सामान बनाकर खर्च की प्रवृत्ति को बढ़ाया जा रहा है। उसके चलते बिन जरूरी उद्योग प्रदूषण को बढ़ा रहे हैं। विकास के नाम पर प्राकृतिक संपदा को बिना सोचे समझे असंतुलित किया जा रहा है। आनेवाले समय में पूंजीवाद का सबसे खतरनाक परिणाम हम ग्लोबल वार्मिंग के रूप में देखेंगे।

30 करोड़ अमेरिकन एंव यूरोपियन के बढ़ते उपभोक्तावाद की वजह से अमीर देशों में बढ़ी पर्यावरण की समस्याओं से बचने के लिये मैनूफेक्चरिंग चाइना, इंडिया एंव दुसरे गरीब देशों की तरफ मोड़ा जा रहा है। क्या आप कल्पना कर पायेंगे जब 300 करोड़ चीनी एंव भारतीय उनके उपभोक्तावाद की बराबरी करेंगे? तब पर्यावरण पर कितना प्रतिकूल असर पड़ेगा एंव ग्लोबल वार्मिंग कैसा कहर बरपायेगी ?

पूंजीवाद के क्या दुरगामी परिणाम होंगे और वह क्या कहर बरपायेगा यह एक गहन अध्ययन का विषय है।

पूंजीवादीयों को मजबूत बनाने हेतु छोटे छोटे देशों में अपरिपक्व राजशाही एंव तानाशाहों को बिठाकर नैसर्गिक संपदा का दोहन करना शुरू किया गया। इन राजशाही एंव तानाशाहों के द्वारा दमन एंव पच्छिमीकरण को थोपकर पैसा कमाने की प्रवृत्ति की वजह से धार्मिक कट्टरवाद जन्म हो गया है।

धार्मिक कट्टरवाद आज मानवता को कलंकित करते हुए डर और आतंक का माहौल बनाने में कामयाब हो रहा है। आज जगह जगह धार्मिक उग्रवादिता जोरो पर है पता नहीं आनेवाले हजार साल बाद कौनसे धर्म दुनिया में बचेंगे ?

इन सब असफल विचारधाराओं के दुष्परिणामों से मुक्ति पाने के लिए दुनिया भर के नेताओं को भारतवर्ष

के इतिहास का गहरा चिंतन करना चाहिए। हम सबको रामराज्य एंवम महावीर के समय की सामाजिक व्यवस्थाओं का गहन अध्ययन करना होगा। हम सिर्फ आज की सोचते हैं या बीस सालो का विजन बनाते हैं। 22 वी सदी मे हमारी संतानो को इसके क्या परिणाम भुगतने होंगे इस पर चिंतन होना चाहिए। आनेवाले हजारो सालो तक पर्यावरण संतुलन कैसे बना रहे इस पर चिंतन होना जरूरी है एंवम सभी जीवजंतु अपना अस्तित्व बनाए रखे इस पर भी चिंतन होना जरूरी है।

(लेखक राजस्थानी प्रकोष्ठ भाजपा मुंबई से जुड़े हैं।)